

प्रेरि मन प्रेम लगौ हर तीरि

परमार्थ की सच्ची लगान

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश अगस्त, 1968 में छपा सत्संग प्रवचन)

यहां कौमों, मजहबों, समाजों का सवाल नहीं है। यहां केवल या परमात्मा का सवाल है या उन लोगों का सवाल है, जिन्होंने परमात्मा को पाया है। उनका नाम आप कुछ रख लें। हम सारे ही जो यहां बैठे हैं, यह सब उसी के आशिक हैं, उसी के भक्त हैं।

सैंकड़ों आशिक हैं दिलाराम सब का एक है।

जिसको हम चाह रहे हैं, वह सबका एक है। वह रब्बुल आलमीन है, सब आलमों का रब्ब है। न वह रब्बुल हिन्दू है, न रब्बुल मुसलमान है, न रब्बुल सिख है, न रब्बुल ईसाई है। अरे भई मनुष्य जाति सब Creation (रचना) का प्रभु, परमात्मा, मालिक कुल है। उसी के हम सब पुजारी हैं, उसी के चाहवान हैं। जो भी उसके चाहवान हैं, सच्चे मानों में वह सच्चा रिश्तेदार है। जो उसकी बातें सुनाये वह हमारा सच्चा भाई और सच्चा मित्र है। बात तो यही है। तो इस वक्त एक शब्द आपको गुरुबाणी से सुनाया जायेगा।

गुरु रामदासजी साहब का यह शब्द है। यह बड़े कमाल के गुरु भक्त थे। वैसे तो हर एक महात्मा के अन्तर गुरु भक्ति होती है। क्योंकि गुरु भक्ति के बगैर यह मन्जिल ही तय नहीं होती। क्राईस्ट ने कहा, देखो भई मैं अंगूर का पेड़ हूँ, तुम मेरी शाखें हो। जब तक शाखें अंगूर के पेड़ में जुड़ी रहेंगी, तब तक वह फल लायेंगी। तो इसलिये कहा I am the vines, thou art the branches, so long as you are embedded in me you shall bring forth abundant fruit. So you cannot do without me. यसू मसीह साहब ने फर्माया जब तक तालब मुर्शिद से जुड़ता नहीं है, जब तक तालब, यह कहो

गुरु भक्त नहीं बनता है, वह हक-परस्त (प्रभु भक्त) नहीं हो सकता, Guru Precedes God. परमात्मा को हमने देखा नहीं है। वह जितना ऊँचा, अति सूक्ष्म और अगम है, जब तक हम उतने ही ऊँचे न हो, हम उसको कैसे देख सकते हैं? हर एक आदमी अपने Level से उसको देखता है। अब हमें हवा में कुछ नहीं नजर आ रहा। क्या हवा में कुछ नहीं है? है तो जरूर, मगर वह अति सूक्ष्म है। हमारी आंख का Level स्थूल है, इसलिये हमें नजर नहीं आता। अगर हम खुर्दबीन, एक आला (यन्त्र) होता है, Microscope, उसके जरिये देखेंगे, उसका क्या खासा (गुण) है, एक चीज को कई सौ गुना बढ़ाकर, बड़ा करके दिखलाता है। जब वह इतना स्थूल बन जाता है कि हमारी आंख की Range में आता है, हम उसे देखते हैं। यही हवा जो इस वक्त नजर नहीं आती, यहां कीड़े-मकोड़े भरे नजर आयेंगे। हैं अब भी, मगर वह आंख बनी नहीं।

इसलिये जब तक उतना ऊँचा इन्सान न हो, उसका पहिला कदम क्या है? Guru precedes God. जिसमें वह इजहार कर रहा है। यह उससे पहिले आता है, वह है, God man, God plus man अगर शिष्य Guru man बन जाये तो Godman हो गया कि नहीं? “बिन देखे कैसे को ध्यान” जिसको देखा नहीं उसका ध्यान कैसे बन सकता है? तो इसलिये Guru Precedes God. पहिले गुरु भक्ति है। गुरु फिर क्या है? गुरु जिसम नहीं है। गुरु वह ताकत है जो जिसमानी पोल पर इजहार करती है। वह न पैदा होती न मरती है। जिसम सारे महात्माओं ने लिया और छोड़ गये। हम भी छोड़ेंगे। तो जिसम के पोल पर वह ताकत इजहार करती है।

ब्रह्म बोले काया के ओहले ।

काया बिन ब्रह्म क्या बोले ॥

जो इजहार का पोल है, जिस पोल पर वह इजहार कर रहा है, उसको भी हम कहते हैं, यह गुरु है। असल गुरु वह पावर है, जो उसमें Obsess (प्रवेश) कर रही है। तो उसका जो भक्त बन जाये, पहिले जिसम से सिलसिला चलता है, हम जिन्सियत (सहजातीयता) खासा है। हम उसको देखते हैं। फिर उसकी आंखों में एक इजहार देखते हैं। उसमें महव (लीन) हो कर, पिण्ड, दुनिया माफीहा को भूल जाते हैं। ऊपर Level में आते हैं। तो गुरु भक्ति, तकरीबन हर एक महात्मा ने इस पर जोर दिया है। क्राईस्ट यही कहता है। सेन्टपाल

कहता है, क्राईस्ट के मुतलिक, It is I, not now I. पहिले कहते हैं, यह मैं हूँ। कहते हैं, नहीं मैं नहीं हूँ। It is christ that lives in me. यह यसू है जो मुझमें बोल रहा है। हाफिज साहब ने क्या कहा ?

चुनां पुरशुद फजाये सीना अज दोस्त ।
ख्याले खेश गुम शुद अज्ज जमीरम ॥

कि हमारे सीने की फजा उस प्रीतम से, मुर्शिद से इतनी भर गई है कि अपने आपे का जो ख्याल है कि मैं हूँ, वह भी भूल गया कि मैं हूँ या वह है।

मन तोशुदम तो मनशुदी मन तनशुदम तो जांशुदी ।
ताकस न गोयद बाद अर्जीं मन दीगरम तो दीगरी ।

मैं तू बन गया, तू मैं बन गया, मैं तन बन गया, तू मेरी जान बन गया, ताकि इसके बाद लोग यह न कहें कि मैं और हूँ, और तू और है। समझे! इसी तरह सब महात्माओं ने कहा है। एक जगह हाफिज साहब ने कहा-

न दारम बाक अज मौजे खतर बादोस्त पैवन्दम ।

कहते हैं, मेरी पैवन्द दोस्त के साथ, मुर्शिद के साथ लग गई। एक दरख्त की शाख को काटकर दूसरे दरख्त में लगा देते हैं, उसको पैवन्द लगाना कहते हैं, और जब वह पैवन्द लग जाये, उसका खासा, गुण क्या होता है? फल की शक्ति तो वैसी ही होती है मगर रंग और बूँ उस पेड़ की होती है जिसमें वह कलम लग जाती है। तो कहते हैं, मेरी पैवन्द मेरे मुर्शिद से लग गई। इसलिये अब मुझे कोई खौफ, भय नहीं है। न जन्म का न मरण का न आने का न जाने का न माया का न काल का, कहते हैं क्योंकि मैं तो उस अमृत में ढूब गया हूँ, उस में गोते लगा रहा हूँ।

गरीके आवे हैवां रा गमे गुर्दन नमे बाशन्द

जो अमृत में गरक हो जाये, उसको मौत का क्या खौफ रह जाता है। समझे। तो ऐसे गुरु भक्त को, गुरु भक्ति पहला जीना है। समझे। जो फनाफीशेख हो गये (गुरु में समा गये) फनाफी अल्लाह हो गये (प्रभु में समा गये)। यह आसान (सहल) कदम है। तो इस वक्त बात यह है, असल में, कि हम हैं आत्मा, आत्मा है जुज (अंश) जिसका जुज है, उसका

कुल, अंशी भी है। हम हैं चेतन स्वरूप, जिसका जुज है उसका कुल भी होगा ना। वह समुन्दर, चेतनता का समुन्दर ठाठे मार रहा है, प्रभु परमात्मा जिसको कह दो। हर एक अंश कुल के साथ मिलना चाहता है, कायदे की बात है।

तो यह कुदरती कशिश किसी न किसी सूरत में हमारे सामने रहती है। वह क्या है, कि हम हमेशा के सुख को पाना चाहते हैं, Everlasting peace शान्ति, उस सुख की तलाश हम करते रहते हैं। समझे! सुख की तलाश कहाँ कहाँ करते हैं? उसकी तलाश हम बाहरमुखी करते रहते हैं। हमें यह मालूम होता है, जब इस बात की खबर पड़ती है ना, अन्तर से, तो कहते हैं, अफ्रसोस! मैं सारी उम्र भटकता रहा, बाहर इसी की तलाश में जो मेरे में खुद मौजूद था। समझे! तो कुदरती जजबा (भाव) आत्मा के अन्तर परमात्मा के मिलने का मौजूद है Innate जातीयता के लिहाज से। यह बाहर दुनिया में मुख्तलिफ़ सूरतों में उस को ढूँढ़ता रहता है। उससे फिर दिल खट्टा होता है, फिर और जगह तलाश करता है। पहिले खेलकूद में, फिर इन्द्रियों के भोगों-रसों में, फिर अकली Intellectual जो हैं, भोगों में कहो, यह भी बुद्धि का विषय ही है ना! जब इनमें हमको सुख और राहत नहीं मिलती, हमारा मुँह किसी और तरफ होता है, हमारी नजर कहीं और पड़ती है। क्योंकि सच्ची तलाश दिल में मौजूद होती है, इसलिए वह मालिक भी सामान सरता है उसको किसी न किसी ठिकाने पहुँचाने का, और वह क्या है? जो उस राज (भेद) को पा चुका है, उसको मिला देता है। उसका नाम जो चाहो रख लो। इस वर्त गुरु रामदासजी साहब जो बड़े गुरु भक्त हुए हैं, उनका शब्द है। गौर से सुनिये वह क्या फर्माते हैं -

मेरे मन प्रेम लगो हर तीर

फर्माते हैं, मेरे अन्तर प्रेम का तीर लग चुका है। हरियाला तीर होता है, जिसका अगला सिरा टेढ़ा होता है। जब अन्तर में फंस जाये, फिर निकलता नहीं है। कहते हैं, उस प्रभु के मिलने की जबर्दस्त ख्वाहिश, लगन, तड़प, भक्ति-भाव, प्यार मेरे दिल में बन चुका है। जैसे तीर किसी के हृदय में लग जाय फिर वह निकलता नहीं, हरियाला तीर जो होता है, कि ऐसी ही यह लगन मुझमें बन चुकी है। अब यह छूटने से छूटती नहीं। समझे! कहते हैं, वह किस चीज का प्रेम लगा है? फर्माते हैं -

हर दरसन को मेरा मन बहुत तड़पे ।
ज्यों तृखावन्त विन नीर ॥

फरमाते हैं कि यह लगन किसलिये है ? कहते हैं, हरि के दर्शन के पाने के लिये है । किर कहते हैं यह तड़प कैसी है ? जैसे प्यासा पानी के लिये तड़प रहा हो, ऐसी ही यह तड़प है । उसके देखे बगैर शान्ति नहीं आती, तृप्ति नहीं, हर घड़ी हर मिनट । प्यासे आदमी की अवस्था बड़ी बुरी होती है । समझे ! जब तक न मिले उसको चैन नहीं आता, राहत नहीं मिलती है । परमात्मा प्रेम है । आत्मा उसकी अंश है, यह भी प्रेम है । इसका खासा है, कहीं न कहीं लगकर रहेगा । इस वक्त इसका प्रेम जिसम से लगा पड़ा है । इसका प्रेम बाल बच्चों से, स्त्रियों, दोस्तों भिन्नों से, जायदादों से, रुपये पैसों से लगा पड़ा है । लगने का खासा है ना कुदरती । यह चीजें फ़ना (नाश) हो जाने वाली हैं, बदल जाने वाली हैं । या हम इनको छोड़ जायेंगे, या यह हमको छोड़ जायेंगे । एक दिन तो ऐसा आयेगा ना ! तो इसमें वह सुख बना नहीं रह सकता । इसलिये गुरु अर्जुन साहब ने फर्माया है -

नदरी आवे तास्यों मोह,
इब किञ्च मिलिये प्रभु अविनासी तोह ॥

कि हे मालिक, हे प्रभु ! जो कुछ हमको नजर आ रहा है, उससे हमारा मोह बना हुआ है । हम इनसे Attached हैं । तू अविनाशी है । तेरे से कैसे बन आयेगी ? जब नाशवान दुनिया में हम लग रहे हैं, अविनाशी से कैसे बनेगी ? तो हम बाहरमुखी लग रहे हैं । यह चीजें बदल जाने वाली हैं । हम हमेशा के सुख को पाना चाहते हैं । सुख इन चीजों में तलाश कर रहे हैं । वह क्षण भिंगुर है, कभी आता है, कभी चला जाता है । इसलिये सन्तों ने इस बात पर जोर दिया है कि-

जो सुख को चाहे सदा शरण राम की ले ।

जो हमेशा के सुख को चाहता है, उसको चाहिए कि राम की शरण ले । राम किसको कहते हैं ? जो परमात्मा रम रहा है । तो सन्त महात्मा याद रखो मवाहिद (एक प्रभु के पुजारी) होते हैं, तोहीद-परस्त होते हैं, एक प्रभु की पूजा सारी दुनिया को सिखलाते हैं । समझे । वह हर एक को उसी से जोड़ते हैं । वह आप जुड़े हैं, लोगों को जोड़ना चाहते हैं । अपने आपसे जोड़ना नहीं चाहते दूसरों को, क्योंकि उनसे फैज (लाभ) होता है, Direction मिलती है, इसलिए उनके पहलू से है यह जो कुछ बयान हुआ । इसलिये कबीर साहब ने फर्माया है कि-

मेरा किया कछु न हो, जो हर भावे सो हो ।

किसी महात्मा की वाणी लो, उस प्रभु के गुणनुवाद गाती चली गई है। तो फर्मति हैं, मेरे दिल में हरियाला तीर, ऐसा तीर लग चुका है, जिसका अगला कुन्डा मुड़ा हुआ है, अन्तर जा कर फंस चुका है। अब खेंचने से यह अब बाहर निकल नहीं सकता है।

घायल की गति घायल जाने ।

अजब हालत बन रही है ।

सूली ऊपर सेज पिया की, किस विध मिलना हो ।

जिसके अन्तर इतनी तड़प और लगन प्रभु की बन चुकी है, वह उसको पाना चाहता है। वह क्या चाहता है? या वह आये मेरे पास या मैं उसके पास जाऊं। दोनों में से एक जरूर मांगता है, अगर वह आए मैं उसको देखता रहूँ, वह मुझे देखता रहे, और किसी को, न वह देखे न मैं देखूँ। यह प्यार के इजहार हैं, प्रेम के। यही खुसरो साहब ने कहा, तू मेरी आंखों में जरा आके बस जा। समझे। ताकि दुनियां तुझे न देखे न तू किसी और को देखे। न मैं तेरे सिवाय किसी और को देखूँ और न तू मेरे सिवाय किसी और को न देखे। यही कबीर साहब ने कहा -

नैनों की कर कोठड़ी पुतली पलांग बिछाय ।

पलकों की चिक डालके पिया को लेहूँ रिझाय ॥

यह उनका कथन है। न मैं किसी और को देखूँ न तू किसी को देखे। यह प्रेम का जजबा होता है। तो फर्मा रहे हैं कि मेरे दिल में उस प्रभु के पाने का जबरदस्त प्यार है। गुरु कहो, जिसके अन्तर यह लगन बन गई, जो प्रभु से मिल गया, वह तो Overflowing (लबालब भरा) प्याला है, प्रभु के प्रेम का। उसकी सोहबत संगत में दूसरों को उसकी थोड़ी क्या Infection मिल जाती है, जाग मिल जाती है। दूसरों को भी थोड़ा रंग आने लग जाता है। भई कुछ है सही, कम से कम इतना मालूम होने लगता है, जो उसको उसका डायरेक्ट में ताल्लुक न भी आया हो, और कुछ Atmosphere का Effect उसका इजहार उसमें महसूस होने लगता है। तो फर्मा रहे हैं कि मेरा वह प्रेम किससे लगा है? किस के लिये लगन है? कि हरि के पाने के लिये। ''हर दरसन को मेरा मन बहु तड़पे जियों तृखावन्त बिन नीर।'' जिस तरह प्यासा पानी के लिये तड़पता हो, ऐसे ही मेरी आत्मा में प्रभु के मिलने की

तड़प बन रही है। प्रेम के बगैर मालिक का मिलना असम्भव है कह दो। परमात्मा प्रेम है, मैं यही अर्ज कर रहा था। हमारी आत्मा भी प्रेम का स्वरूप है। उसके पाने का जरिया भी प्रेम है। जितने साधन, पूजा पाठ, और यह वह, करते हैं, किसलिये करते हैं? कि हमारे अन्तर प्रभु के लिए प्यार बने। अगर हम यह कवायदें जमनास्टकें करते हैं, और दिली उभार नहीं बना, तो इसका क्या फायदा है?

सद साल इबादत कुनद निमाजी नेस्त ।

सौ साल इबादत करता रहे, वह सच्चे मानों में निमाजी नहीं बन सकता।

कसे को इश्क नदारद खुदा राजी नेस्त ॥

जिसके अन्तर प्रभु का प्रेम उभरा नहीं, यह ज्वाला प्रज्जवलित नहीं हुई वहां प्रभु का पाना कहाँ? खुदा के राज को कैसे पा सकते हैं? प्रेम एक ऐसी ज्वाला है जिसमें सिवाय प्रीतम के और चीज वहां नहीं ठहर सकती है। कुरान शरीफ में इसलिये जिकर आया है कि-

अलइशक नारे तहर्रक मासिवाये अलमतलूब

इश्क या भक्ति या प्रेम, एक जलती आग है, जिसमें सिवाय जिसको हम चाहते हैं, उसके सिवाय और कोई नहीं रह सकता। यह प्रेम एक बाज है, जहाँ पर आ जाये पर वहां सब चिड़ियें छुप कर उड़ जाती हैं, कोई और नहीं रह सकता। तो इसलिये दसवें गुरु साहब ने कर्माया है-

साँच कहूँ सुन लेहो सबै

जिन प्रेम किया तिनहीं प्रभु पायो ।

ऐ भाईयों, मैं तुमको सच सच की बात कहता हूँ कि जिनके अन्तर प्रेम आया, उन्होंने ही प्रभु को पाया है। तो कर्माते हैं, मेरे दिल में वह प्रेम किसके लिये है? प्रभु के लिये बन चुका है, उसके दर्शनों को मैं पाना चाहता हूँ। और मैं तड़प रहा हूँ, जैसे एक प्यासा पानी के बगैर तड़प रहा है।

हमरी बेदन हर प्रभु जाणे मेरे मन अन्तर की पीर

कहते हैं, मेरे दिल की अवस्था को कौन जानता है। कहते हैं, वह परमात्मा। "हमरी

बेदन हर प्रभु जाणे ।'' मेरे मन अन्तर की पीड़ा उठ रही है, तड़प उठ रही है, इसको सिवाय उस प्रभु के और कौन जान सकता है ? या वह जाने जो धायल हो । ''धायल की गति धायल जाने ।'' मैं अपना जिकर करूँ, उन्नीस सौ-ग्यारह-बारह ई. का जिकर है, संस्कार तो होते ही हैं ना । जिसके अन्तर लगन पैदा होती है कुछ पिछले संस्कार उभरते हैं, कुछ बाहरी बन जाते हैं । तो उसमें ऐसी अवस्था हो गई कि काम काज करते हुये, दफ्तर में आँसु बहते थे, कागज खराब हो जाते थे । हे परमात्मा, यह क्या बात है ? मेरे घरवाले यह समझते थे, मेरी तबदीली उन दिनों में हुई थी, वह कहते शायद इसकी तबदीली हो गई, इसलिये यह रोता है । दूसरों को क्या खबर ? तो जिसके अन्तर Mystery of life का सवाल आ जाये एक बार, वह हल हुए बगैर नहीं रहता । वह क्या है ? हम कौन हैं । समझे ! कई बार शायद मैंने आगे भी जिकर किया, मुझे मरते हुये आदमी के किनारे बैठने का इतिफाक हुआ । पहिले अगर जीवन नेक-पाक हो जाये तो अन्तर्यामिता हो जाती है । यह कुदरती बात है । यह सब कुछ होते हुये, मगर जिन्दगी का मुईम्मा हल नहीं हुआ था । एक मरते हुये आदमी के सिरहाने बैठा मैं, वह मर रहा था । मैं सोचता था, कि अरे भाई यह मर रहा है । इससे कोई चीज निकलनेवाली है । मुझमें है । वह कौन सी चीज है ? मैं तमीज करके देख नहीं सकता था, अनुभव नहीं था, वह कौन सी चीज है, जो हम में काम कर रही है, और इससे निकल रही है । वह मरता हुआ इन्सान बच्चों को मिला, भाईयों से मिला, सबसे मिलकर मुआफी मांगकर फिर आंखें मीच ली और जुदा हो गया, मेरे देखते देखते और मैं हैरान था । भाई बड़ी हैरानी वाली बात है, मेरे सामने ऐसा ही एक बुत पड़ा है । इससे कोई चीज निकल गई और मुझमें है । वह कहां है मुझे पता नहीं । उस मुर्दे को लेकर शमशान भूमि में पहुँचे । रास्ते में भी मुझे यही हैरानी थी । आंखें फाड़-फाड़कर मैं देखता था कि भई वह कौन सी चीज है जो इससे निकल गई है, और मुझमें है । तमीज नहीं आती थी, समझ नहीं आती थी कि वह कौन सी चीज है ! सच्ची बात तो यही है । आलिम और फाजिल (विद्वान) सब इसी बात में गिरफ्तार हैं । जब शमशान भूमि में गये, वहां एक बूढ़ा आदमी मर चुका था, उसको चिता पर लिटा दिया था । यह जवान था, इसको भी लिटा दिया गया । दो नजारे मेरे सामने थे, जवानी के और बुढ़ापे के । अरे भई मौत से कोई Escape (छटकारा) नहीं । और दिल दहला, अरे भई क्या चीज है । अन्धेर गरदी है । यह जवान है, यह बूढ़ा है । दोनों से कोई चीज निकल गई, मुझमें है । वह कौन सी चीज है जो निकल गई । बड़ा दिल घबराया । Mystery of life का सवाल दिल में घर कर गया । किताबों में ढूँढना शुरू कर दिया फिर

दिन-रात। सारी-सारी रात पढ़ता रहा, यह Mystery क्या है? किताबों में इसका हल नहीं दिया, इशारे दिये हैं, सब्ज बाग दिखलाये हैं, फलाने महात्मा का कथन है जीते जी मरो, यह करो, वह करो, मगर उसमें यह नहीं दिया कि वह कैसे होता है? यह इल्मे-सीना है, Practical Self-analysis है। जब किसी महापुरुष के पास बैठो, वह बिठाकर थोड़ा बहुत तजुरबा दे, On the way. रस्ते पर पड़ जाये तो, रोज-रोज तरक्की होती है। तो जब हजूर के चरणों में पहुँचे इस बात की समझ आई।

तो यह उन दिनों की कैफियत में बयान कर रहा हूँ कि कैसे तड़पता था। आँसू बे अख्तयार बहते थे, चलते फिरते। लोग कहते थे, शायद यह कहाँ से आ गया है तबदील होकर, इसलिये रोता है। अरे भई, वह किसी और चीज के लिये रो रहा है। अब, ''धायल की गत धायल जाने, '' दूसरों को क्या पता है? हम दुनियां के लिये तो हजारों बार रोते नजर आते हैं मुआफ करना, मगर वह सब ईसू इस तरफ के लिये है, प्रभु के लिये नहीं। कितने लोग में जो प्रभु के लिये सिर पटकते फिरते हैं। तड़प बे अख्तयार होती है। वह पेशखेमा है। जैसे बादल आयें तो बारिश की उम्मीद होती है। जिस फलदार दरखत में शगूफे पड़ जायें, वहां फल की उम्मीद होती है। जिस दिल में यह कैफियत आ गई वहां प्रभु के आने की उम्मीद है। यही उभार है। यह उसके आने का पेशखेमा है।

सो फर्मा रहे हैं बड़े प्यार से कि मेरे अन्तर में वह पीड़ा है, जिसको मैं बयान नहीं कर सकता। कौन जान सकता है? कहते हैं लोगों को, बिचारों को क्या पता है कि क्या हो रहा है। कहते हैं, वह प्रभु जाने। वह तो जानता है कि मेरे दिल की क्या हालत हो रही है। मैं उसके बगैर रह नहीं सकता, तड़प रहा हूँ। एक सैकिन्ड भर भी जीना मुहाल है। गुरु अमरदास साहब ने एक जगह फर्माया है-

एक पल बिसरें जे तू स्वामी तो जाणूं बरस पचासा

पल मात्र हे प्रभु तू अगर भूल जाये तो पचास वर्षों के बराबर वह पल हो जाता है। एक शायर (कवि) ने कहा है कि ऐ हिसाबदान तूने बड़े हिसाब लगाये हैं, क्या तूने कभी यह भी हिसाब लगाया है कि जो, क्या कहना चाहिये बिरह, या बिछोड़े में रात गुजरती है, वह कितनी लम्बी होती है। दुनियां तो दुनियां को रोती है रात भर और प्रभु के भक्त प्रभु के लिये रोते रहते हैं।

हंसी खुशी जे पियु मिले तो कौन दुहागिन होय ।

इस चीज का आना बड़ा जरूरी है । इसके बगैर जो दिल में जन्मों-जन्मों के संस्कार जो दबे पड़े हैं, वह धोये नहीं जाते । यही आँखों का पानी है जो इसको धो डालता है । मौलाना रूम साहब ने इसलिये कहा कि अगर तू हज करना चाहता है तो तरी के रस्ते जा, खुश्की के रस्ते नहीं पहुँच सकेगा । तरी का कौन सा रास्ता है ? यही आँखों से आंसू, मोती गिरने वाले जो हैं ना, इसके रस्ते देखने वाले लोगों को मिलता भी है, और उस तरफ जा सकते हैं ।

मेरे हर प्रीतम की कोई बात सुनावे,
सौ भाई सो मेरा बीर ।

कहते हैं, ऐसी हालत में आप देखेंगे, कुदरती बात है, जिसके लिये लगन हो, तो उसकी कोई बात भी आकर सुना दे, वही अच्छा लगता है । समझे ! कहते हैं, मेरे हर प्रीतम की अगर कोई आकर मुझे बात सुना दे, कहते हैं सच्चे मानों में मेरा वह भाई है, भई सच्चा भाई वही है, जो मेरे हर प्रीतम की बातें मुझे सुनाता है । प्रीतम से मिलना चाहता है । देखिये प्यारा तो प्रीतम है, मगर उसकी बात सुनाने वाले से भी प्यार है । जो उस तक पहुँचाये, बताओ कितना प्यार होगा ? वह सब कुछ कुर्बान करता है, जो मर्जी है ले जाओ भई । प्रेम में आकर वह इतना धनी बन जाता है, अमीर बन जाता है कि दीन और दुनियां दोनों कुर्बान कर सकता है । समझे ! तो जो उस हालत में हमें अपने प्रीतम की बात आकर सुनाये, वह बड़ा मीठा लगता है, बड़ा अच्छा लगता है, हालांकि हमारा उससे प्यार नहीं मुआफ करना, वह प्यार उसके लिये है ? जिसके लिये हम तड़प रहे हैं । मगर जो बात उसकी हमें आकर सुनाये, हम यही कहते हैं, सब कुछ इस पर कुर्बान कर देंगे । सच्ची बात तो यही है । गुरु अर्जुन साहब ने क्या फर्माया “मेरे हर प्रीतम को कोई बात सुनावे ॥” यह तो गुरु रामदासजी साहब फर्मा रहे हैं । गुरु अर्जुन साहब फर्माते हैं-

कोई आन मिलावे मेरा प्रीतम प्यारा,

मेरे प्रीतम प्यारे को कोई भी आन कर मिला दे, फिर-

हैं तिस पे आप बेचाई ।

मैं बै खरीद लिख दूँगा, मैं तुम्हारा हूँ । हालांकि वह चाह किसी और को रहा है । मगर

कहते हैं जो भी मेरे प्रीतम को मिला दे मैं अपने आपको बै खरीद कर ढूँगा सारी उम्र के लिये ।
कहते हैं किसलिये ?

हों दरसन देखन के ताई ।

हरि के दर्शनों की चाह है, इसलिये । मुझे सारी उम्र का गुलाम कर ले, मगर वह मुझे मिला दे । बात तो इतनी है । तो गुरु रामदासजी साहब फर्मा रहे हैं, भई जो मुझे हरि दरसन के लिये तड़प प्यासे की तरह तड़प उठ रही हैं, बेचैन हूँ, बेहाल हूँ, उस दुख को दुनिया के लोग कुछ नहीं जानते । वह प्रभु जानता है हमारी क्या हालत है । हां जो हरि प्रीतम की कोई मुझे आकर बात सुनाये वह मेरा सच्चा मित्र है, सच्चा भाई है । अब देखिये यहां समाजों का कहां सवाल है भई ? शराबी चार हों, किसी समाज के हो, कितना प्यार होता है । एक चीज के चाहवान हैं । अरे भई हम सारे उसी एक के भक्त हैं, फिर हमारा आपस में प्यार क्यों नहीं है ? अगर प्यार नहीं तो क्या कहोगे ? यह कहना पड़ेगा कि प्रभु के लिये प्यार नहीं जागा । वह सबमें है । यह पहिला कदम है मुआफ करना, परमार्थ के रस्ते जाते हुये ।

जबते साध संगत मोहि पाई ।

न कोई बेरी न बेगाना ।

सकल संग हमरी बन आई ।

जब से साधु महापुरुषों के चरणों में हूँ उस दिन से बैरी और बेगाना कोई नहीं, वह है सब में, सबके लिये प्यार पैदा हो गया । वहां यह उपदेश नहीं मिलता कि इससे मिलो और उससे न मिलो । वह कहते हैं, सबमें परमात्मा है । कौमों, मजहबों, समाजों का सवाल ही नहीं ।

सतगुरु ऐसा जानिये जो सबसे लये मिलाई जियो ।

जो सबको मिलाकर बैठता है । वहां बैठे हुए ख्वाब भी नहीं आता यह कौन है, और वह कौन है, समझे ! तो कहते हैं, कि मेरे हरि प्रीतम के मुतलिक कोई बातचीत सुनाये, वही सच्चे मानो में मेरा मित्र और सच्चा रिश्तेदार है, सच्चा मित्र है वही, सच्चा रिश्तेदार है, और कोई नहीं । यह रिश्ते दुनियां के तो यही रह जायेंगे, वह रिश्ता साथ जायेगा । उसका कारण, आदर्श एक जिधर जाना है सबने, प्रभु से मिलना है । सब वहां मिल जायेंगे ।

एक बार हजूर से जिकर हुआ कि महाराज जिसको उपदेश मिल गया, कुछ तरक्की

करके पहुँच गये, कोई अभी स्कूल में बैठे हैं, इनमें कैसे बनेगी ? कहने लगे, भई दरिया के पार जाना है। कोई पहिली बेड़ी में पहुँच गये कोई दूसरी में पहुँच गये। आखर घाट तो वही है, जहां जाना है, इसलिये सब वहीं मिलेंगे। यह ऐसा रिश्ता है।

सच्चा साक न तुर्टि गुरु मेले सईयां ।

यह एक ऐसा रिश्ता है, जिसमें गुरु हमें पिरोता है, अनुभवी पुरुष पिरोता है, जो कभी टूटने वाला नहीं। दुनियां के रिश्ते जो टूट जाते हैं ना ! तो सच्चा रिश्तेदार वही है जो हमारे प्रीतम की बात सुनाये। दुनिया में मुआफ करना, जो हमारे दिली जजबात हैं ना, जो उसके मुतल्लिक बात करे, उसको हम मित्र समझते हैं। अरे भई प्रभु के भक्त उसी को मित्र समझते हैं, जो उनको प्रभु की बात सुनाये। यहां कौमों, मजहबों, समाजों का सवाल नहीं है। हमारे दिल में सब महात्माओं के लिये इज्जत है, सब भाईयों के लिये इज्जत है, वह किसी समाज, किसी कौम, किसी मुल्क में क्यों नहीं है। आत्मा एक जैसी है। आत्मा न हिन्दू है ना मुसलमान है, न सिख है, न ईसाई है। आत्मा की जात वही है, जो प्रभु की जात है। फिर उसमें (आत्मा आत्मा में) आपस में सच्चा रिश्ता है। आगे ही मौजूद है। हम भूल चुके हैं उस रिश्ते को। महात्मा हमको मिलाता है, उस रिश्ते की सङ्गत कराता है। Conscious Co-worker कराता है। वह देखता है कि भई सब में वही एक रिश्ता कायम है। हर एक जुञ्च (अंश) कुल, अंशी से मिलना चाहता है। आपस में भी प्यार होगा, प्रभु से भी प्यार होगा। दोनों लाज्म-मलज्जूम हैं।

**मिल मिल सखी गुण कहो मेरे प्रभु के,
ले सतगुरु को मति धीर।**

कहते हैं, ऐ सखी ! हम सब सखियां हैं। ‘‘एका पुरुष सभाई नार।’’ सब आत्मायें सखी हैं, और परमात्मा एक पुरुष है, जिसको मिलने से इसको सदा का सुहाग मिल जाता है। दुनिया के सुहाग दस साल, पचास साल, सौ साल, चलो हजार साल सही, मगर जिसकी आत्मा प्रभु से मिल गई, वह सच्चे, सदा के सुहाग को पा गये। तो कहते हैं, ऐ सखियो ! आपस में मिल बैठो, और क्या करो ? उस मालिक से बातें करो। कहते हैं कैसे करो ? किसी सत्गुरु से मति लेकर। सतगुरु को मिलो, वह आपको उससे मिलाने का सामान

करेगा। दो तरह के गुणानुवाद होते हैं भई। एक तो देखकर, "जब देखा तो गावा।" एक देखता है, नशे में आता है कुछ न कुछ कहता है। एक किताबों से पढ़ा-पढ़ाया ख्याली पुलाव पकाता है। फर्क है कि नहीं? एक सुहागिन है वह पति के गीत गाती है। और लड़कियां भी हैं, वह भी वही गाना गाती है, मगर दोनों में कितना भारी फर्क है। भक्त जन उस मालिक के रस को ले रहे हैं, उसको देख रहे हैं। उसकी वह आंख बन चुकी है। जब उसके गुणानुवाद गाते हैं, वह नशे में जा रहे हैं। दूसरे भी गुणानुवाद गाते हैं, मगर वह नशा न उसमें है, न दूसरों को मिल सकता है। बात तो इतनी है।

तो कहते हैं, ऐ सखियों! आपस में मिल बैठो। क्या करो? उस मालिक, उस समर्थ पुरुष की कहानी करो भई, बात-चीत करो। तो इसलिये क्या फर्माते हैं, "लो सतगुरु की मत धीर।" सतगुरु को मिलो, उसके रस को पाओ, मालिक के। फिर आपस में मिल कर गुणानुवाद गाओ। कहते हैं, उसके पाने से, सतगुरु को पाने से, तुम्हारी मति धीरज पकड़ेगी। मति, Intellect, बुद्धि स्थिर होगी। वह बुद्धि को स्थिर करने का सामान बतलायेगा। वैसे कितने भी तुम उस मालिक के गुणानुवाद गाओ, मति Intellect करती ही रहती है, सोचती रहेगी हर वक्त। है नेक ख्याल ही, मगर The same good old custom corrupts itself वही रुकावट का कारण बन जाती है। भगवान कृष्णजी ने गीता में क्या फर्माया है, नेक और बद कर्म दोनों ही जीव को बांधने के लिये एक जैसे हैं, जैसे सोने की बेड़ी और लोहे की बेड़ी। ख्याल अच्छा कर रहा है, मगर है तो फैलावे में ना। तो मति धीरज कैसे कराने का समान देगा। अन्तर में थोड़ा रस जायेगा, तो उसमें थोड़ी देर के लिये टिर्काव मिलेगा कि नहीं? तब तो आगे जमीन बनेगी जिससे आगे रास्ता खुलेगा। और कोई इलाज नहीं। तो कहते हैं, आपस में सब भाई, ऐ सखियो! मिल बैठो।

होय एकत्र मिलो मेरे भाई,
दुविधा दूर करो लिव लाई।

इकत्र होकर, सब मिल बैठो भई। जो दो रुखी बनी बैठी है, उसको मिटा दो और प्रभु के गुणानुवाद गाओ। बस। सारी मनुष्य जाति एक है। यह अच्छा है वह बुरा है, अरे भई अच्छा कौन और बुरा कौन जब -

एक नूर ते सव जग उपजिया, कौन भले को मन्दे ।

कौन बुरा है, कौन मन्दा है, कौन अभीर और कौन गरीब । सबके अन्तर परमात्मा की तरफ से एक जैसे हकूक मिले हैं, जिसमानी बनावट के लिहाज से, जिसम की अन्दरूनी साख्त (बनावट) जो है, वह भी एक जैसी है, यह नहीं कि हिन्दू के लिये खास रियायत है और मुसलमानों के लिये नहीं या ईसाईयों के लिये खास रियायत है और सिखों के लिये नहीं है । नहीं । परमात्मा ने तो इन्सान बनाये भई । बात बड़ी साफ़ है । आत्मा चेतन है, Conscious entity है । यह जुज्व (अंश) है । यह कुल से मिलना चाहती है । असल बात तो इतनी है । धक्के खा खा कर, फिर इन्सान का आखर रुख इधर मुड़ता है, कोई पीछे धक्के खा कर, तजरुबे के बाद, इस पर पहुँच चुके हैं, कुछ धक्के खाकर पहुँच जायेंगे । क्योंकि हमेशा की राहत तो और कहीं है नहीं, उसी मालिक के मिलने में है, जुज्व के कुल के साथ जोड़ होने से है, यह कहो । सो फर्मा रहे हैं बड़े प्यार से, कि ऐ सखी, तुम आपस में मिलकर उस प्रभु की बातें करो । सतगुरु से मिलो, उससे तुम्हारी मति धीरज पकड़ेगी, टिकाव बनेगा, तजरुबा होगा, फिर गुणानुवाद गाओगे ।

जन नानक की हर आस पुजाओ,
हर दरसन शान्त शरीर

अब प्रार्थना करते हैं कि हे मालिक ! मेरे दिल की जो आसा है ना, उसको पूर्ण कर दो । आसा क्या है ? हरि दर्शन की । हरि दर्शन की आसा है । और मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा आदर्श भी यही है कि हरि के दर्शन करे ।

भई परापत मानुख देह हुरिया ।

गोविन्द मिलन की यह तेरी बिरिया ।

परमात्मा के मिलने का वक्त है । आत्मा, जुज्व में, कुल के मिलने की एक तड़प है । हमारी यही आसा है । हे मालिक इसको पूर्ण कर दो । इसे पूर्ण करने से क्या है कि मुझे शान्ति, टिकाव हमेशा के लिये तृप्ति और शान्ति हो जायेगी । मैं जो चीज चाहता हूँ वह मिल गई तो शांति हो गई कि नहीं ? तो हे प्रभु, हे मालिक, आप दया करके हमें अपने दर्शन दो । बस । मेरी जो आशा है इसको पूर्ण कर दो । अब यह चीज कहाँ से मिलती है ? जो मिला है, सत का स्वरूप है, वही मिलायेगा ना ! जो खुद नहीं मिला, वह आपको क्या मिलायेगा ?

आलिम आपको इल्म दे सकता है और बस। अनुभवी पुरुष, Contacted (मिला हुआ) है, तुमको Contact देगा। थोड़े दिन के अभ्यास के बाद उसी चीज को तुम पा जाओगे जिसको वह पा चुका है।

शिष्य और गुरु में कोई फर्क नहीं। उसमें प्रगट वह चीज हो चुकी है। वह (शिष्य) प्रगट होने के लिये उसके दर पर आया है। बात तो यही है ना। इन्सान सीखता रहता है सारी उम्र। जिस चीज के ख्वाहिशमन्द (अभिलाषी) हो, वैसे माहिर के पास चले जाओ, तुम सीख जाओगे। उसका नाम कुछ रख लो। आज तो सतगुरु या गुरु का नाम बदनाम हो रहा है, तो यह सिर्फ इस सबब से है कि जिनकी यह Qualification नहीं है, जो Competent (समर्थ) नहीं है, वह Acting posing (स्वांग रचना) कर रहे हैं। दुनियां उनको देखती हैं गिरावट में आती है। उनके लिये It is all gurudom. वह भी सच्चे हैं। मगर सच्चे महात्मा के बगैर जीव की कल्याण न हुई न हो सकती है।

अब श्री गुरु अर्जुन साहबजी का शब्द आपके सामने रखा जायेगा। गौर से सुनिये वह क्या फरमति हैं, और उसका अमली तौर पर हमारे जीवन पर क्या असर है? हम क्या कर रहे हैं? गौर से सुनने के काबिल हैं।

मेरे अन्तर लोचां मिलण की प्यारे,
हौं क्यों पाई गुरु पूरे ।

श्री गुरु अर्जुन साहब फर्मा रहे हैं कि मेरे अन्तर के अन्तर में उस मालिक के मिलने की जबर्दस्त ख्वाहिश बस रही है। अब उसको पाने के लिये क्या जरिया है? पहिले सवाल तो यह है कि हमारे घट में क्या उस मालिक के मिलने की जबर्दस्त इच्छा है कि नहीं? हमारी जबान तो एक बात कहती है, कि हाँ हमें चाहिये, दिमाग भी यह कहता है, कि हाँ बात अच्छी है, अगर मिल जाये तो। मगर दिल दुनिया मांग रहा है। अपने दिल में कंधी मारकर देखो हमारा दिल क्या माँगता है? लोगों को देखा-दाखी चित्त में आ जाता है, भई हमें भी परमात्मा का मिलाप हो जाये, मगर दिल नहीं मांग रहा। सवाल तो यह है। जब दिल कोई कोई चीज मांगता है, तो वे अख्तयार अन्तर से प्रार्थना कहो, बिनती कहो, अरदास कहो, फूट फूट कर निकलती हैं। जिस चीज को दिल मांगे ना, वे अख्तयार, उसी की आंहे दिल से निकलती है, और पुकारे निकलती है कि हे प्रभु! हे मालिक! मुझे यह चीज दिला दे। देख

लो, दुनियाँ में हमारा तजरुबा है, इस बात का, कि दुनिया में जब कोई चीज हम माँगते हैं तो कितनी पुकारे करते हैं? रात को सोते भी पुकार करते हैं, जागते भी करते हैं। और हर वक्त करते रहते हैं। सो जो चीज दिल मांगे, हमारा अन्दरला (अन्दर वाला) मांगे, यह कह दो, उसी चीज के पाने की बेअख्तयार अन्तर से प्रार्थना होगी, अरदास निकलेगी, बेनती होगी, दम दम के साथ। तो हमारे लोगों की आम हालत क्या है? अगर दिल मांगे तो प्रार्थना भी कबूल हो। जबान मांगती है, दिमाग मांगता है, मगर दिल नहीं मांगता। सवाल तो यह है। हम Sincere नहीं, हम अपने आपको धोखा दे रहे हैं। अगर हम Sincere हो जायें, हमारी जबान, हमारा दिमाग, हमारा दिल मुत्तफिक हो जाये तो काम बन जाये। जितनी हम Superficial (जबानी जबानी) कुछ प्रार्थना करते भी हैं किसलिये करते हैं, कि दुनिया हमको मिल जाये, उसके लिये तो बड़े दिल से करते हैं। प्रभु को बीच में एक मददगार चीज मान लेते हैं। अगर वह मदद करता रहे, तब तो ठीक प्रभु, नहीं यो प्रभु कहां!

मजूनँ था। वह लैला से बड़ा प्यार करता था। उसका दीन-ईमान लैला बनी पड़ी थी। एक बार लोगों ने उसको कहा कि भई मजनूं खुदा तुमको मिलना चाहते हैं। तो कहने लगा अच्छा वह मिलना चाहता है तो उसको कहो लैला की शकल बना कर आये। उसे खुदा भी नहीं मंजूर जब तक वह लैला की शकल न बना कर आये। मुआफ करना हमको भी परमात्मा कबूल नहीं जब तक वह हमारी ख्वाहिशात (इच्छायें) पूरी न करे। तो हम दुनियाँ के लिये उस को याद कर रहे हैं ना। अगर मजनूं मरेगा तो उसको मर कर खुदा मिलना है या लैला? आप बतायें! लैला ही मिलेगी ना! तो दिल का सवाल है, दिल क्या माँगता है? अगर सच्चे दिल से पुकार निकले तो मालिक सामान करता है। गुरुबाणी में जिफर आया है बड़ी खूबसूरती से बयान किया है, फर्माते हैं -

सत सन्तोष करे अरदास, ताँ सुण सद बहाले पास

अगर सत्य हो, जबान दिमाग और दिल मुत्तफिक हो, जब तीनों में एक बात हो, तो वही चीज सत्य होगी ना, बाकी सब झूठ, धोखा और फरेब। कहते हैं सच्चे दिल से, सत भाव से, जिसमें तुम्हारा दिल, दिमाग और जबान मुत्तफिक हो। पहिली शर्त। दूसरे सन्तोष। जो मिला है, शुकर है भई। शुकराना भी साथ हो। और फिर दिल, दिमाग और जबान मुत्तफिक हो, कहते हैं ऐसे की प्रार्थना सुन कर वह प्रभु क्या करता है? ''ताँ सुण सद बहाले पास!''

ऐसी पुकार को सुनकर वह बच्चे को पकड़कर बिठा लेता है पास। कहता है, कहो बच्चा क्या माँगता है। समझे। तो अन्दर लोचां का सवाल है। क्या हृदय प्रभु को माँग सकता है? सवाल तो यह है।

नामदेवजी थे। उनका, बयान किया जाता है कि उनके घर का, मकान का, जो चबूतरा था वह गिर गया, छज्जा जिसको कहते हैं। घरवालों ने कहा जाओ भई बढ़ई को बुला लाओ। बेड़ी कहते हैं बढ़ई को, तरखान को बुला लाओ। बाहर चले गये। जो प्रभु की याद में, भक्त हैं ना, आशिक है, उनको प्रभु ही सूझता है। गये बाहर। याद में बैठ गये। भूल गई दुनियाँ। शाम पड़ गई, उठकर आये। घरवालों ने पूछा, क्यों भई तुमने बेड़ी को बुलाया है कि नहीं? भई आज याद नहीं रहा, कल ले आयेंगे, इसी तरह, कहते हैं, कई दिन गुजर गये। बाहर जाना और प्रभु की याद में महव हो जाना। शाम को आना। फिर रोज वही तजकरा। आखर एक दिन कहने लगे, घरवाले, भई आज अगर तुम नहीं लगाओगे तो आखरी तुम्हारी बड़ी बुरी गति होगी। कहते हैं, "भक्ताँ ते सन्सारियाँ जोड़ कदी नहीं आया।" गये। अच्छा भई आज जल्लर ले आयेंगे। उस दिन भी वही। आशिक या भक्त लोग किसी के समझाने से नहीं समझ सकते, याद रखो। दिली लगन जिधर लग गई, उसी के महव हैं, उसी रंग में रंगे हैं। गये। फिर याद में बैठ गये। शाम पड़ गई। आँख खुली, ओ हो! आज बड़ी बुरी गति होगी। घर चले, दिल में सोचा, अच्छा भई, जो भगवान करे। भगवान ने देखा मेरा भक्त बड़ी मुश्किल में है। वह बेड़ी की शकल बना कर आ गया। पूछा नामदेव का मकान कहां है भई? तो लोगों ने कहा, यह है। अच्छा भई। बना दिया चबूतरा, छज्जा वगैरा जो कुछ था। बनाकर चले गये। अब देखिये, खुदा के हाथों का बना हुआ चबूतरा, छज्जा क्या खूबसूरत होगा और थोड़ी सी देर में बनाकर चले गये। जब आये तो दूर से देखा कि छज्जा बना हुआ है। पहिचान गये कि भगवान काम कर गया।

जबाने बुलबुलाँ दानद के भी दानद।

बुलबुलों की जबान बुलबुल ही जानती है। भक्तों की आँख पहिचान जाती है, कि आज भगवान काम कर गया। तकड़े हुये, दिल जरा शेर हो गया, अब गली मुहल्लेवाले पूछने लगे, क्या मजदूरी लेता है, तुम्हारा बेड़ी, बड़ा अच्छा छज्जा बनाकर चला गया। कहने लगे। बेड़ी प्रीत मजूरी माँगे। वह तो प्रेम की मजदूरी माँगता है। कहते हैं कब आता है? कहते हैं-

कुल कुटुम्ब सगल ते तोड़े तो हमरो बेडी आवे हो ।

जब सब तरफ से तुम्हारी लगन टूट जाये, उस एक के साथ रह जाये, फिर वह आ जाता है, बिन बुलाए आता है। नामदेव तो भक्ति में महव थे ना ! उसने तो नहीं कहा कि भगवान मेरा छज्जा बना दो। फिर ! भगवान को भक्त का बिरद होता है ।

मैं आपको अपनी जिन्दगी का एक वाकिया अर्ज करूँ । हजूर के वक्त मेरा लड़का बीमार था सख्त । बड़े डॉक्टरों ने कहा कि इसकी हालत बहुत नाजुक है, यही कोई अठारह बीस साल का था, तो तुम दो-तीन दिन की छुट्टी ले लो इसकी किसी वक्त भी उम्मीद नहीं, शायद खत्म हो जाये । बहुत अच्छा ! इतवार आ गया । हजूर का यह हुक्म था कि भई इतवार को अमृतसर सत्संग करने जाना । मैं सुबह चार बजे उठा, दिल में आया कि डॉक्टरों ने तो यह कहा है । मैंने कहा, मैंने कौन सा बचा लेना है ? गुरु जाने अपना काम मैं अपने काम जाऊँ । चलो । मैं चला गया अमृतसर । अमृतसर सत्संग हो गया । गर्मी के दिन थे । दस बजे तक सत्संग का भोग पड़ा । ग्यारह एक बजे के करीब मैं चला । जी मैं आया आधे रस्ते तो आया ही हूँ, चलो दर्शन कर जाऊँ । चल पड़े व्यास को, पहुँचा डेढ़ एक बजे । गर्मी के दिन थे । हजूर ऊपर थे । उनको पता लगा कि मैं आया हूँ । बुला भेजा । लेटे हुए थे । उठकर बैठ गये । पूछने लगे, लड़के का क्या हाल है ? यह लोग जानी जान तो होते ही हैं ना ! मैंने कहा हजूर वह बीमार था, ज्यादा ही बीमार था । मगर मैंने समझा हजूर का हुक्म है, मैंने यहां रहकर क्या बचा लेना है । फिर उदास होकर बैठ गये । मैंने कहा हजूर जो आपका नाम ले, उसको कोई फिकर चिन्ता नहीं रहती, आप इस तरह से बैठ गये । कहने लगे भई तूने जो सिर से बोझ उतारा मुझे उठाना पड़ा । तो समर्थ पुरुषों के कायदे हैं । अगर मैं अर्ज करूँ, अगर तुम सब कुछ उन पर छोड़ दो, वह सारे काम करता है, बौगर तुम्हारे बताये और मांगने के करता है, समर्थ पुरुषों की यही महिमा है । तो वह आता है, जब दिल में ख्वाहिश हो तो फिर क्यों नहीं आयेगा । सवाल तो यह है । अगर तुम्हारे दिल में ख्वाहिश हो भी हो, तुम्हारा दिल थोड़ा उस तरफ हो मुंह उस तरफ हो, फिर भी वह तुम्हारी सम्भाल करता है । और अगर तुम्हारा मुंह भी उधर हो और तुम माँगो भी तो क्यों नहीं मिलेगा ? गुरु वाणी कहती है -

पिता कृपाल आज्ञा यह कीनी,

बारक मुख मांगे सो दीनी ।

उस दयाल पुरुष ने यह हुक्म दिया है, असूल बनाया है जो बच्चा मुंह से हमेशा माँगेगा मैं दूंगा ।

नानक बारक एहो सुख मांगे,
मोहि हृदय बसे नित चरणं ।

कहते हैं, मांगना क्या चाहिये ? कि भई आपके चरणों का मेरे हृदय में निवास हो । यही कुरान शरीफ कहता है, कि बन्दा जो मुझसे मांगेगा, मैं दूंगा । सब महात्माओं पूर्ण पुरुषों ने यही कहा है अपनी अपनी जबान है, बात वही बयान कर रहे हैं । तो अगर हमारे अन्तर में इस बात की लोचा जबर्दस्त हो उसके मिलने की तो वह जरूर मिलेगा ।

एक बच्चा था । एक कमरे में बैठा था । उसकी माता रसोई में थी । दूध उबाले खा रहा था । बच्चा उठना चाहता था । उठा, पांव फिसल गया मुँह के बल गिरा । फिर दीवार को पकड़कर उठना चाहा, हाथ फिसल गया । फिर मुँह के बल गिरा । फिर कोई और कपड़ा लटक रहा था । उसको पकड़कर उठना चाहा, फिर नीचे फिर सिर के बल गिरा । लाचार होकर, आपको पता है जब इन्सान लाचार होता है तो पुकार करता है । कहता है हाय माँ ! वह आवाज माता के कानों में पहुँची । माता ने क्या किया, दूध की पर्वाह नहीं की, उबाले खा रहा था, खाने दो । माता भागी दौड़ी, जा कर बच्चे को उठाया, गोद में लिया, सीने से लगाकर वापस आई, तो दूध सब उबलकर गिर गया था । बच्चा कहने लगा, माता मैं तुमको बड़ा प्यारा हूँ । माता ने कहां, हां बच्चा । बच्चे के दिल में अब यह आ गई, समा गई, कि जब भी माता को बुलायेंगे माता आ जायेगी । कुछ दिनों के बाद वैसा ही कमरे में खड़ा था, गिरा कोई नहीं था, वैसे ही किये जाये हाय माँ । हाय माँ । आधा घन्टा, हाय माँ ! हाय माँ ! करता रहा, माता नहीं आई । बच्चे ने दिल में सोचा कि आज माता ने बहुत अच्छी चीज कोई और बनाई होगी, चढ़ाई होगी चूल्हे पर, इस खातर नहीं आई । रिड़ता रिड़ता पहुँच गया, उसके पल्ले को पकड़कर कहने लगा, माता क्या चढ़ाया है आज ? कि बच्चा दाल चढ़ाई है । कहने लगा, कभी नहीं हो सकता, बताओ । बताया तो दाल ही थी । कहने लगा, माता क्या सबब है उस दिन तो मैंने एक बार हाय माँ कहा था तू भागी भागी दौड़ी आई, और आज मैं आधा घन्टा तक हाय माँ हाय माँ करता रहा तू नहीं आई माता ने कहा बच्चा आज तेरी आवाज में वह दर्द नहीं था ।

भई दिल अन्तर लोचां हो, हमारे अन्तर में दुनियां की लोचाँ भरी पड़ी है, दुनियां की खाहिशात भरी पड़ी है । हमारे अन्तर जिसम और जिसमानियत की जो ताल्लुकात और यह वह चीजें, यह सब भरी पड़ी है । अब वहाँ प्रभु कहाँ आये ? दिल तो माँग रहा है दुनिया को,

जबान खुदा को माँग रही है। ऊपर से तो सिजदे कर रहे हैं, पूजा और पाठ कर रहे हैं, दिल में बच्चे समा रहे हैं। बुतखाना बना पड़ा है। बताओ उस जगह खुदा कैसा आएगा? प्रभु के पाने का जरिया क्या है? जब पुकार हो तो वह मालिक दया करता है, किसी पूर्ण पुरुष को मिला देता है, मिले हुए को मिला देता है। कहते हैं हाथी की चिंघाड़ उसको पीछे पहुँचती है। समझे। और कीड़ी की आहट उसे सबसे पहले पहुँचती है। वह सुनता है। वह हमारे घट-घट में है, वह कहीं आसमानों पर बैठा नहीं है, वह हमारी आत्मा की आत्मा है। घट घट बासी है।

कृपा करे तां सतगुरु मेले।

किसी सतगुरु, पूर्ण पुरुष का मिलना बड़ी भारी खुशकिस्मती है। यह कब मिलता है? जब मालिक मिलाता है। जैसे हम उस प्रभु को नहीं जानते इसी तरह हम किसी पूर्ण पुरुष को भी नहीं जान सकते। अन्धा आँख वाले को क्या तलाश कर सकता है? आँख वाला खुद ही दया करके हाथ पकड़ ले तो पकड़ ले। जिसकी अन्तर की आँख अभी नहीं खुली वह मन इन्द्रियों के घाट पर बैठा है, समझे, वह प्रभु को देख नहीं रहा, उस पोल (मानव-देह) पर जो Higher power काम करती है, उसका अभी अनुभव नहीं हुआ, तो उसके लिए तो मामूली इन्सान ही है ना। गुरु नानक साहब को माफ करना, हम लोगों ने क्या कहा? कुराहिया! किन लोगों ने? जिनकी आँख नहीं खुली थी। अब उस प्रभु को मिले तब, जब कोई पूर्ण महात्मा, समर्थ पुरुष मिले। यहां लफज पूरे का बरता है। पूरा गुरु। इसका मतलब है कोई अधूरे गुरु भी होते हैं। भई अधूरे गुरुओं से दुनियां भरी पड़ी है। समझे। बट्टा उठाओ तो गुरु, साधु, और सन्त मिलते हैं। सचमुच पूरा गुरु, अनुभवी पुरुष, आत्म-तत्व दर्शी कहीं कहीं मिलता है। जिसने देखा है, वही दिखा सकता है। अरे भई यह Acting posing का काम नहीं है, सांग बनने का सवाल नहीं, पूर्णता का सवाल है।

धुर खसमें का हुक्म पया,

बिन सतगुरु चेतिया न जाय।

कहते हैं उस मालिक ने यह कानून बना दिया है कि जब तक कोई सतस्वरूप हस्ती ना मिले, मैं नहीं मिलता। Fundamental असूल! जिसने देखा जिसकी आँख खुली है, वही तुम्हारी आँख खोलेगा ना! यह लेकचर बाजी का नहीं भाई, न किताबों के ग्रन्थ पोथियों के लिखने का सवाल है। बिलकुल नहीं! यह तो अनुभव का सवाल है। क्या उसके बड़े बड़े

आडम्बरों से हम पहचान सकते हैं ? क्या उसके बड़े बड़े महलों से या बड़ी जायदादों से या बड़े आलीशान मन्दिरों और समाजों से ? ना भई ! महात्मा की परख केवल एक ही है, जिसमें किसी को कोई धोखा नहीं हो सकता है। वह यह कि महात्मा तुमको कोई परिचय दे। समझे। कुछ अनुभव दे, थोड़ा तजरुबा दे। कब ? जब तुम्हारा दिल उस तरफ मुतवजे हो। अगर तुम परख के लिये वैसे ही सहज स्वभाव चले जाओगे, पास बैठे रहोगे, कुछ नहीं मिलेगा। हमारे हजूर फर्माया करते थे, कई बार लोग उनसे सवाल करते कि महाराज फलाने को यह नाम सारा पता लग गया है, तो हजूर मिसाल देकर फर्माया करते थे कि भई कपास के खेत से अगर कोई कुत्ता गुजर जाये तो कपड़े थोड़े सिला लेने हैं उसने ? सारा भी सुन ले, जब तक तवज्जो न मिले काम कैसे बन सकता है ? सवाल तो तवज्जो का है भई।

यह निगाहे जाँ फज्जयश बस बवद दरकारे मा।

उनकी की एक मिहर आलूद नजर कहो, जान के उभारने वाली नजर कहो, यह काफी है। हजूर के पास हम देखा करते थे, कई बार बड़े बड़े पण्डित आ जाया करते थे, आया करते हैं आमिल पुरुषों के पास पण्डित लोग, आलिम लोग भी बहस मुबाहिसे को आ जाया करते हैं। तो वह क्या करते थे, अकड़ कर बैठना, खूब, इल्म के जोम में होते थे ना ! जब दो चार बातें की, कुछ अपने इल्म का घमण्ड था वह दिखलाया, आखर हजूर ने एक बार फर्माया कि भई तुम अन्तर जाते हो, चलो तुम भी ले चलो और मैं भी ले चलता हूँ। यहां क्या करे कोई ?

एक दफा एक फिलासफर उनके पास बैठे, करतारसिंह नाबीना, उनको आगे बिठाया गया। सत्संग सुना। सत्संग सुनने के बाद कहने लगे, महाराज, मैं वह हूँ जिसकी धुवाँधार तकरीरों से दुनियाँ भाग जाया करती थी। किसी स्टेज पर भी जा कर मैं लेक्चर दिया करता तो वह फिर दुबारा सामने नहीं आया करते थे। आज मैं वही हूँ, जो आपके चरणों में एक तिफले मकतब (स्कूल का बच्चा) होकर बैठा हूँ। देखो अनुभवी पुरुष की Talk बात बड़ी सही और साफ, दिल में असर कर जाती है। आमिल पुरुष के बचन और खाली जबानी जमाखर्च के बचनों में कितना भारी फरक है !

सुन सन्तन की साची साखी सो बोले जो पेखे आँखी ।

सन्तों की शहादत को सुनों, वह हमेशा सच्ची है। क्योंकि वह कुछ बयान करते हैं जो वह अपनी आँखों से देख रहे हैं ?

नानक का पादशाह दिसे ज़ाहिरा

उनकी वह आँख बन गई, जिससे वह हर एक जहिर नजर आता है। वह किसको बुरा कहें।

एक नूर ते सब जग उपजिया कौन भले को मन्दे ।

उनका सबसे प्यार है। यह अनुभवी पुरुषों की निशानी है। उनको किसी से ईर्षा, द्वेष नहीं, किसी से झगड़ा नहीं। वह अपने दुश्मनों से भी प्यार करते हैं। क्राईस्ट आये। वहाँ के लोगों ने उनको सवाल किया कि महाराज ! हमें कैसा बर्ताव करना चाहिए लोगों के साथ ? तो कहा कि भई हजरत मूसा ने तुमको क्या कहा ? तो कहने लगे कि हजरत मूसा ने तो यह हुक्म दिया है, Tooth for tooth and nail for nail. जो तुमको दाँतों से काटे, उसको दाँतों से काटो, जो तुम्हें छुरा चुभोये तो छुरे से काम लो। तो कहने लगे, Because of your hardness of heart he gave this commandment. कि तुम्हारे हृदय पत्थर की तरह थे, इसलिये उन्होंने यह हुक्म दिया। कहने लगे, फिर आप क्या कहते हैं ? कहते हैं, मैं तो यह कहूँगा Love thy neighbour as thyself कि अपने पड़ोसी से ऐसा प्यार करो जैसा तुम अपने साथ करते हो। कहते हैं, जो हमारे साथ दुश्मनी करें उनके साथ ? कहने लगे Love thy enemies. अपने दुश्मनों के साथ भी प्यार करो। डेरे में कई वाकेयात होते रहे हजूर के वक्त। लोगों ने आकर उनके खिलाफ प्रचार करना और लंगर में रोटी खाकर जाना। रोटी लंगर से खानी। कभी हजूर ने न नहीं की। अच्छा भई खाने दो। यह सबूत है। अर्ज करने का मतलब है कि ऐसे महापुरुषों के अन्तर ईर्षा, द्वेष नहीं। कोई बुरा भी करे, उसका भी भला माँगते हैं। वक्त आया वही भाई उनकी कदर करने लगे। और अभी तक कदर करते हैं। सच आखर सच है।

दुनियां में Shopping (दुकानदारी) हो रही है। “सभी भुलानो पेट को धन्धा।” कहीं कहीं सच्ची तीव्र इच्छा वाला, जो प्रभु को चाहता है, मिलता है। ऐसे भी लोग बहुत कमयाब हैं। गुरुद्वारे, धर्मस्थान, हर एक समाज के भरे पड़े हैं। वहाँ लोग जाते भी हैं, कुछ पूजा पाठ भी करते हैं। कई ग्रन्थों-पोथियों का स्वाध्याय भी करते हैं। मगर उनके दिल की तह की तह में जाकर देखो, खोलकर देखो क्या है ? हमारे बच्चे राजी रहे, हमारी रोजी खुल जाये। दुनियां के लिये प्रभु की याद मैं हूँ। हम प्रभु को Cats paw बनाना चाहते हैं, मुआफ करना। हमारे हृदय में उसकी ख्वाहिश नहीं है। तो पहिली बात जो हमने सीखनी है भई, जो चीज तुम माँगते हो, जरूर मिलेगी तुमको। इसमें कोई शक नहीं। मैंने अभी कुरान शरीफ से

बतलाया गुरु साहिबों की बाणी से बतलाया Commonsense के जरिये आपके सामने पेश किया जो तुम माँगते हो वह मिलता है । अगर आज हमें नहीं मिल रहा, उसका कारण ? हम दिल दिमाग और जबान सहित नहीं माँग रहे, सत हमारी जबान में नहीं है, इसलिये वह चीज आपको नहीं मिल रही है । दर्वाजे में खड़े हो जाओ, किसी को कहते हो ना, आओ भई, जल्दी से अन्तर आओ, अन्तर आओ । आप दर्वाजे से नहीं हटते । फिर ! Prayer करो, प्रार्थना करो, And wait इन्तजार करो । वह बेहरा नहीं, मालिक । वह हमारी आत्मा की आत्मा को जानता है । हमारी जहाँ वृत्ति जिस तरफ जा रही है ना, दिल, उसको भी जानता है ।

हरेक के भाव को वह जानने वाला है । पेश करो । बस ठीक है । जो वह करने वाला है, वह देख रहा है, यह क्या माँगता है ? बाज वक्त वह पिता देखता है, बच्चा एक हठ करके माँगता भी है । पिता देखता है कि इसमें इसको पीछे जाकर नुकसान होगा, गलती होगी, दुख होगा, वह नहीं भी देता । कई बार हम चीजें माँगते भी हैं और हमारी पूर्ण भी हो जाती है, मगर पीछे हम पछताते हैं, हाय क्यों हमने यह मांगा था । तो सबसे आला प्रार्थना क्या है ? उससे उसको मांगो, या सबसे बढ़कर क्या है कि जो आप हमारी बेहतरी के लिये ठीक समझते हो, वह हमें दे दो । झगड़ा पाक । सब कुछ उस पर छोड़ो, काम बन जायेगा । अब अपने दिल की हालत बयान कर रहे हैं कि हमारे हृदय में उस प्रभु के मिलने की लोचा, जबर्दस्त खाहिश, Ruling passion बस रही है । हे मालिक, हे प्रभु ! मुझे वह वक्त कब आयेगा, जब ऐसे पूर्ण पुरुषों से मिलाप होगा ।

एवड ऊँचा होवे कोय, तिस ऊँचे को जाने सोय ।

जो अति सूक्ष्म और अगम है, हम इन स्थूल आँखों के साथ कैसे देख सकते हैं ? जब हम भी उसी Level के बराबर ऊँचे हो जायेंगे तब ही उसको हम देख सकेंगे । हवा है । देख लो इसमें हमें कुछ नजर नहीं आ रहा । क्या इस हवा में कुछ नहीं है ! है तो सही मगर सूक्ष्म है । हमारी आँख स्थूल है । या हमारी आँख इतनी सूक्ष्म हो जाय, इसकी मुताबिक पकड़े जब तक नजर आये या Microscope खुर्दबीन के आले से हम उसको देखें जिसका खासा है कि एक चीज को कई सौ गुण बड़ा करके दिखलाता है, ताकि हमारी आँख के Range में आ जाये, हम उसे देखने लग जायेंगे । जिनके अन्तर सूक्ष्म नजर बन गई, वही उसको देख सकते हैं । अब ऐसे पुरुष जिनकी सूक्ष्म नजर बन चुकी है, वह महापुरुष मिलें हमको, हमारी नजर को भी उतनी ही सूक्ष्म बनाकर हमको दिखा सकें, तब काम बने ना ।

आगे मैं आपको अर्ज करूं, गुरु के भी कई दर्जे हैं। पहिले मैंने कहा, एक Acting posting करने वाले हैं, स्वाँग करने वाले हैं। उनको तो किनारे करो, भई दुनियाँ भरी पड़ी है। उसके बाद हमको सामाजिक गुरु मिलते हैं, अपराविद्या के। वह आपको समाजों के रसम-रिवाज के कानूनों में लगाते हैं। यह भी अच्छा काम है। Man is social इन्सान मिल जुलकर रहता है। किसी न किसी समाज में रहे, नहीं तो नई बनायेगा। इसलिए जहां है, वहाँ रहे। उसके मुताबिक अपना जीवन नेक-पाक और सदाचारी बना ले। अगर जो अपराविद्या के गुरु हैं, सामाजिक गुरु, वह भी सही तौर से प्रचार करें तो दुनियाँ में लोग सुखी हो जायें। पाकिस्तान क्यों बना और कैसे बना? यह अपराविद्या के सामाजिक गुरुओं की तंगदिली का प्रचार था जिसने यह बनाये। हर एक समाज क्या कहती है? हम उस परम पिता के बच्चे हैं -

एक पिता एकस के हम बारक तू मेरा गुरु हाई।

कुरानशरीफ कहता है कि उस खुदा के कुनबे के हम मेम्बर हैं। सारे महात्मा यही कहते हैं -

एक नूर ते सब जग उपजिया कौन भले को मन्दे ।

तो सबके अन्तर जब वही है तो गैरियत कहां है। सामाजिक महात्मा भी इसी बात का प्रचार करते हैं। फिर? भाई झगड़ा किस बात का? हर एक समाज कहती है, किसी का बुरा चितवन न करो, किसी की चोरी न करो, जीवन नेक पाक और सदाचारी बनाओ, निष्काम सेवा करो, किसी से नफरत न करो, सबसे प्यार करो। अगर सामाजिक गुरु भी सही मानो में प्रचार करे तो दुनिया में सुख हो जाये।

मगर यह भी काफी नहीं। इसके ऊपर एक और दर्जा है। जो पराविद्या के महात्मा, आत्मतत्त्व दर्शी हैं, उनके मिले बौगर जन्म-मरण खत्म नहीं होगा। जब तक आत्म-तत्त्व का बोध नहीं होगा भई तब तक काम नहीं बनेगा। दुनियाँ में सामाजिक गुरु भी बड़े हैं, साधु-महात्मा ऋषि मुनि महात्मा मिलते हैं, मगर आत्म-तत्त्वदर्शी कहीं कहीं हैं। राजा जनक को केवल एक पुरुष मिलें, अष्टावक्र, सारे हिन्दोस्तान भर की जो सभा राजा जनक ने बुलाई थी। सब हैरान और सरगरदान थे इस बात पर, इतनी थोड़ी सी देर में राजा जनक ज्ञान का अनुभव मांगता था वह कैसे दिया जाय। राजा को ज्ञान देने के लिये केवल अष्टावक्रजी निकले। Only one man. अगर उस जमाने में, जब हम कहते हैं हिन्दोस्तान की रुहानियत

बड़े अरुज (चर्म सीमा) पर थी, अगर एक पुरुष निकला था तो आज कोई हजारों में थोड़े हैं? जितने ज्यादा हो, खुशी की बात है। उसकी एक ही परख होगी! उसका प्यार सबसे है, दिली प्यार उसके अन्तर Ruling passion प्रभु की है, दुनियां की नहीं। जब तक ऐसा पूर्ण महात्मा न मिले, काम नहीं बनता।

वह पूर्ण महात्मा कहां पर मिल सकता है? भई किसी समाज, किसी मुल्क का वह कैदी नहीं। किसी भी समाज में आ सकता है। कभी वह चमारों में थे, रविदासजी। कभी वह छीम्बों में थे, नामदेवजी। कभी वह जुलाहों में थे, कबीर साहब। कभी वह खत्रियों में थे, कभी वह जाटों में थे, कभी कहीं, कभी कहीं, और भई जहां दिया जागेगा वहाँ पर्वाने जायेंगे। सवाल तो यह है। नीच-ऊँच का सवाल नहीं। अनुभव वहां होगा, जहां अनुभव है। बाकी सारा वक्त का जाया करना है। तो गुरु पूरे का सवाल है। यही प्रार्थना करते हैं कि हे मालिक! मेरे दिल में तेरे मिलने की ख्वाहिश बड़ी जबर्दस्त है। कैसा वक्त होगा जब मुझे पूरा गुरु मिले।

मैं अपने जीवन का वाकिया अर्ज करूं, मैं जब छोटा था, कुदरती संस्कार थे। गुरु ग्रन्थ साहब की एक तुक रोज पढ़ा करता था और उसको लिख लिया करता था और उसकी बार बार पड़ताल करते रहना दिन भर कि इसमें क्या लिखा है। उसमें जगह जगह दिया है, भई गुरु, साधु, सन्त, महात्मा को मिलो। बार बार यही बात। अब मैं प्रार्थना करूं कि हे परमात्मा, शायद मैं गुरु और साधुओं सन्तों का कायल हूँ, सचमुच महात्मा का। शायद तलाश करते किसी ऐसे गुरु से मेरा वास्ता पड़ जाये जो तुझ तक न पहुँचा हो, मेरा जीवन तो बरबाद चला गया। यही मैं प्रार्थना करता था कि अगले जमाने में ध्रुव भक्त, और प्रह्लाद भक्त को बराहे-रास्त (सीधा) आप दया कर सकते थे, जो आज क्यों नहीं कर सकते? यह दिली तड़प थी। जानता भी था कि बगैर साधु सन्तों के मैं उसे मिल नहीं सकता, मगर डरता था, शायद किसी ऐसे से वास्ता पड़ जाये जो दुनियांदार ही हो, प्रभु तक न पहुँचा हो, मेरा जीवन तो व्यर्थ चला गया। यही खाहिश जबर्दस्त रही। कई करिश्मे मिलते रहे। आखिर हजूर मिले। बाहर मैं उनके चरणों में उन्नीस सौ चौबिस 1924 ई. में पहुँचा, वैसे 1917 में वह आने शुरू हो गये अन्तर में, थोड़ा बहुत जो कुछ करता था, मैं समझता था यह गुरु नानक आ गया। मैंने एक कविता लिखी थी उस जमाने में कि मैंने गुरु नानक को देखा, उसकी यह शकल है।

सात साल तक, हर-रोज Guidance मिली, सफर भी होता था। सात साल बाद 1924 में जब मैं वहां पहुँचा तो देखा, वही थे। तो मेरे अर्ज करने का मतलब है कि वह तो पुकार सुनता है। कैसी पुकार? सच्चे दिल की हो, वह क्यों न सुने! मैंने हजूर से अर्ज की कि महाराज इतनी देर क्यों की? कहने लगे, भई यही मौकिया मुनासिब था। तो यह समर्थ पुरुष जिसम नहीं होते यह याद रखो। जो पहिले मैंने अर्ज की ना, यह जिसम नहीं हुआ करते। इस जिसम के पोल पर कोई पावर होती है जो सब जगह काम करती रहती है। गुरु के तीन दर्जे हैं। एक गुरु, जिसमानी तौर पर। उसको गुरु, कहते हैं। वह पान्धे (अध्यापक) का काम करता है, पढ़ाता है, लिखाता है, हमारी तरह हमदर्दी करता है। बाज़वक्त, तुमको दुख है, कहता है भई बड़ा अफसोस है। यह भी करता है। मगर बीच में बड़ा पक्का है। वह कहता है, भई इसका दिल साबत रहे। बाहर इन्सानी दर्जे के लिहाज से भी वह मुकम्मल इंसान है, मगर वह कुछ और भी है। समझे! वह वही कुछ नहीं।

जब तुम पिण्ड को छोड़कर ऊपर के मण्डलों में आओ तो वह गुरुदेव है, दिव्य-रूप गुरु है, नूरी स्वरूप है उसका Radiant form of the master. जब उससे, शिष्य किसी महापुरुष से उपदेश लेकर पिण्ड को छोड़कर ऊपर आना सीख जाये और उसके चरणों में पहुँच जाये, बात-चीत होने लगे, फिर वह गुरुसिख बनता है। वह सतपुरुष में लय होता है। जो होनेवाली पावर है, वह है सतगुरु! वह उस पोल (मानव देह) पर इजहार कर रही है। इसीलिए कहा, “सतगुरु रहिया भरपूरे।” वह भरपूर है। अरे भई जिसम हो तो कैसे भरपूर हो? तो हम लोगों को तो गुरु की समझ नहीं मुआफ करना।

किसी महात्मा का जीवन ले लो, जिसके अन्तर Ruling passion प्रभु के मिलने की बन चुकी है, वह उसी के पाने के लिये विहवल और तड़पती है। हर एक महात्मा के जीवन में यह तुमको चीज मिलेगी। क्योंकि यह पेशखेमा (निशानी) है उस प्रभु के आने का! समझे! जैसे फलदार दरख्तों में पहिले शगूफे पड़ जाते हैं तो उस वक्त उम्मीद होती है कि अब फल पड़ेगा इसमें। समझे! जब बारिश आनी हो तो पहिले बादल आ जायें तो बारिश की उम्मीद होती है। इसी तरह भई जिस हृदय में इतनी विहवलता और सोज गुदाज, तड़प और विरह जागी समझो प्रभु आने वाला है।

राबिया बसरी थी। मुसलमान फकीर हुई है। उसके जीवन में बड़ा सोज गुदाज था। प्रभु की नमाज पढ़ती, सुबह से पढ़नी, रात पढ़ जानी, फिर कहीं आधा घन्टा सो जाना। लोगों

ने पूछा राविया ! तू यह बता कि जब तू नमाज पढ़ती है, खुदा पहिले आता है या जब तू नमाज पढ़ चुकती है, उसके बाद आता है ? तो कहने लगी, भई खुदा पहिले आता है, नमाज में पीछे पढ़ती हूँ। कहने लगे, तुमको कैसे पता लगता है ? कहते हैं, जब मेरे दिल में बड़ी जबरदस्त विरह सोज और गुदाज, बैचैनी, बेहाली पैदा होती है, मैं समझती हूँ वह धक्का देने वाला आ गया। तो यह पेशखेमा है, उस प्रभु के आने का।

महात्माओं के जीवन तुम पढ़ो। गुरु नानक साहब थे। छोटी उम्र में दुनियां की तरफ चित्त वृत्ती नहीं थी। पिता ने देखा, यह उदास है, चलो तीर्थों को भेज दो। तीर्थों पर फिरकर और उदासी बढ़ गई। लम्बे पड़े रहे। वह किसी अपनी लगन में थे। घरवालों का एक इकलौता बेटा था। उन्होंने कहा भई किसी वैद्य को बुलाओ, वैद्य आया, नबजे टटोलने लगा। इस घटना को गुरु साहब ने अपनी बाणी में बयान किया है।

वैद्य बुलाया बैद्यगी, पकड़ ढंडोले बाँह ।

भोला वैद्य न जाणई करक कलेजे मांह ।

ए भोले वैद्य तुमको पता नहीं, यह तो कलेजे में करक लगी पड़ी है, यह तू नबजों में क्या टटोल रहा है ? फिर कहा, “जा बैधा घर अपने”। ए बैद्य ! जा अपने घर तू, हम तो अपने शोह (प्रीतम) में रत रहे हैं, तू क्या कर रहा है ।

हमारे दिल में उस प्रभु के पाने की तीव्र, सच्ची इच्छा होनी चाहिये। पहिली बात। पिछले संस्कार उभर आयें या यहां तड़प सच्ची हो। जब महात्मा मिल जाये तो काम बन सकता है। जो तन-मन के पिन्जरे में कैद है, वह हमको तन-मन के पिन्जरे से कभी ऊपर नहीं ला सकेगा। तो गुरु अर्जुन साहब यही बार-बार कह रहे हैं, अरे भई मेरे अन्तर उस मालिक के मिलने की बड़ी जबरदस्त लोचा है, उस लोचा का पूर्ण करने के लिये कोई मिलना चाहिये। कि हे मालिक ! कब मिलेगा कोई पूरा गुरु ।

जैसे खेल खिलाइये बारक रह न सके बिन खीरे ।

अब मिसाल देकर समझाना चाहते हैं, कि जिस तरह बच्चे को भूख लगी हो, उसको माता खिलाये, बाहर ले जाये, बच्चे को घर से बाहर भेजे, सौ बातें करे, वह एक नहीं सुनता। उसको दूध चाहिए दूध। दूध मुंह में डालो, चुप कर रहेगा। हजार खिलौने उसको खेलने को दो, हजार यह वह करो, वह एक नहीं मानता। कहते हैं, मेरी हालत इस वक्त एक

ऐसे बच्चे की बन चुकी हैं, जो भूखा है। दूध मांग रहा है। दूध के बगैर उसकी कभी तृपती नहीं है। ऐसे ही और जितने खिलौने हैं, यह वह है, यह मुझे, तृप्त नहीं कर सकते। जिस के अन्दर मालिक के मिलने की बड़ी जबर्दस्त खाहिश हो फिर वह क्या दुनियां की चीजें मांगता है कभी ? कभी नहीं। जो प्रभु का प्रेमी है, गुरु रामदासजी साहब फर्मते हैं, सारे समुद्रों के मोती जितने पहाड़ हैं, सबको खोदकर उसके हीरे जवाहरात, सोना चांदी, कीमती चीजें निकालकर एक जगह ढेर लगा दो और एक ऐसा पुरुष, जो उस मालिक का प्रेमी है, अरे भई उसको कहें, बता भई तू, यह लेगा ? तो गुरु रामदासजी फर्मते हैं कि इस तरफ वह देखेगा भी नहीं। जब तक इतनी जबर्दस्त खाहिश न हो काम नहीं बनता।

एक महात्मा के पास दो शिष्य गये। किसलिये कि उनको उपदेश मिले। महात्मा नहा रहा था। कहता है, चलो भई तुम भी नहाने चलो, नहा आयें। दरिया में नहाने लगे। जब बच्चा गोता लगाने लगा तो उसकी गर्दन पानी में पकड़ ली ताकि बाहर न निकले। एक दो मिनट रखा, तड़पने लगा बाहर सांस लिया मुँह खोलकर। कहने लगा, देख बच्चा, अगर तेरे अन्तर जिस तरह इस वक्त सांस लेने की खाहिश जबर्दस्त थी, अगर ऐसी ही खाहिश प्रभु के पाने की जबर्दस्त है, तब तू आ। बताओ कितने लोगों को ऐसी जबर्दस्त खाहिश है? सवाल तो यह है। प्रभु का मिलना अवश्य जरूरी है जहां पर ऐसी सच्ची खाहिश पैदा होगी। जहां आग जलेगी, बेअखत्यार आकसीजन मदद को आयेगी।

हजरत जुन्नैद थे। हजरत जुन्नैद फारस में हुए हैं। एक दफा दरिया दजला पर जा रहे थे। घोड़ी पर सवार थे। घोड़ी अड़ी करने लगी। छोड़ दिया, चलो भई हर तरफ खुदा का मुल्क है, चल भई किधर चलती है। घोड़ी सरपट हो गई। एक पहाड़ की कन्दर पर जा खड़ी हुई। तो उतरे देखा क्या खुदा का करिश्मा है, वहां देखा तो एक आदमी बैठा था। वह बिचारा बहुतेरा ही महात्माओं की तलाश में सिर पटकता रहा न मिला कोई महात्मा। आखर कहा, चलो भाई एक किनारे बैठेंगे। ''अगर है जज्ब उलफत में तो खिंच कर आ ही जायेंगे।'' समझे ! अगर सचमुच तड़प है तो देने वाला आयेगा और जरूर आयेगा। वहां किनारे ऐसी जगह जा बैठा जहां कोई भी न पहुँचे। वह वहां पहुँच गये, खैर बातचीत हुई, तसल्ली हो गई, उपदेश दिया। जब चलने लगे तो कहने लगे, फिर अगर तुम्हें जरूरत हो तो फलाने शहर में फलानी जगह, मेरा पता है, वहां आ जाना। तो किस बेपरवाही से वह कहता है, गो मुझे उससे इतेफाक नहीं सिर्फ जज्बे को बयान करना है। हृदे अदब के अन्तर रहना चाहिये। कहने लगे, आगे जैसे तुम खिंचकर आ गये, अब भी आ जाओगे।

भई तड़प होनी चाहिये, सच्ची लोचां होनी चाहिये। प्रभु कहीं दूर नहीं। वह तो तुम्हारे अन्तर बैठा है भई। और जितने यह महात्मा हैं, मुआफ करना So-called महात्मा को छोड़ दो, जो सचमुच महात्मा हैं, वह इसी काम पर लगे हैं। मालिक कभी उनको इधर भेज देता है, कभी उधर भेज देता है, कभी किधर भेज देता है। अमृतसर का वाकिया है। सुबह का वक्त था। मैं बैठा था वहीं, हजूर भी वहां गये थे लाला दुलीचन्द के यहां, एक सिख सज्जन आ गये। मैंने पूछा भाई साहब कहाँ से आये? कहता है, रात हजूर आये थे। कहा कि मैं फलानी जगह से आया हूँ तुम वहाँ आ जाओ। समझे! मैंने कहा कि आगे कभी दर्शन किये थे? कहता है नहीं, आगे कभी दर्शन नहीं किये थे। जब हजूर मिले तो कहते हैं तुम आ गये भई? कहता है हाँ महाराज आ गया हूँ। तो पहाड़ की चोटी पर जो खड़ा है, वह देखता है किस तरफ आग जल रही है कहाँ धूँआ उठ रहा है? या फिर खुद पहुँचेगा वहाँ, या उसको अपने तक का सामान लाने करेगा, Direction देगा। ऐसी हस्ती का नाम है गुरु, महात्मा। समझे।

“मेरे अन्तर भूख न उतरे अंमाला, जे सौ भोजन में नीरे।

कहते हैं, कि हे माता है माँ, अमाँ! मेरे अन्तर भूख है जो, मिलने की प्रभु को, वह मिट नहीं सकती खावाहे हजारों भोजन दुनिया के दे दो, हजारों सामान दे दो, वह तृपती कहाँ हो सकती है जो गुरु से हो सकती है। भई माता पिता का प्यार भी बड़ा जबर्दस्त है, मगर गुरु का प्यार हजारों माताओं और हजारों पिताओं से ज्यादा लागर्ज (निष्काम) प्यार है। वह हर वक्त यहीं चाहता है कि बच्चे पाँव पर खड़े हो जायें। एक बार रात का समय था। मुझे हजूर के दर्शनों को जाने का मौका मिला। हजूर सबसे ऊपर छत पर विराजमान थे। यह उनकी दया थी। जब खबर मिले दया कर देते थे। मैं चला गया ऊपर। मत्था टेका। अकेले ही थे। मैं बैठा, वह लेटे हुए थे। मैंने कहा हजूरजो बच्चे चलना फिरना सीख गये वह तो कुछ हो गये ना! जो बच्चे अभी हिलना-जुलना नहीं सीखे, उनका क्या बनेगा? हजूर लेटे हुये थे, उठ बैठे चारपाई पर। कहा, कृपालसिंह! मैंने कहा हाँ हजूर। कहा, तुम क्या चाहते हो मैं नाम देना छोड़ दूँ? मैंने कहा हजूर नहीं। कहने लगे कौन सा पिता नहीं चाहता कि उसके बच्चे अपने पाँव पर उठ खड़े हो। यह कभी ख्याल न करो कि जिसने नाम दिया है, उसकी दया नहीं है। वह तो चाहता है कि किस वक्त तुम उसके चरणों में पहुँचो। और अब भी मैं शर्ज करूं, चोला छोड़ने से वह कहीं दूर नहीं गये। जिसको नाम दिया साथ हो बैठता है।

बातों बाशद दर मकानो लामकां ।

जो तुम्हारे साथ रहे, इस दुनिया में भी, जब तुम इस दुनिया को छोड़कर जाओ जीतेजी या मरकर फिर भी वहां पर है, ऐसा गुरु जब मिल गया, फिर तुमको छोड़कर कहाँ जायेगा भई? वह जिस्म तो नहीं थे। हम इस भुलेखे में रहे। हजूर यह फर्माया करते थे बड़ी छोटी छोटी मिसालें कि आज भई कुरसी टूट गई बुलाओ तरखान को, आज चारपाई टूट गई बुलाओ तरखान को, आज दर्वाजा टूट गया बुलाओ क्या अच्छा हो कि तरखान को घर ही लाकर रख लो। क्या मतलब कि तुम गुरसिख बनो। गुरसिख बनो। तब अन्तर गुरु को प्रकट कर लो तुम शिष्य बन गये हो, काम बन गया। तो गुरसिख बनो गुरु को अन्तर में प्रकट कर लो। हर वक्त तुम्हारे अंग-संग रहे। हजूर फर्माया करते थे, गुरु पर्देदार औरत की तरह है। उसने बाहर नहीं आना। वह दर्वाजे में खड़ी है। जो बच्चा दूर रोता है, ''खसमां नू खाये।'' यह लफ्ज बरता करते थे। दरवाजे में आ जाये, वह खेंच कर उसको अन्दर कर लेगी। अब भी वह दर्वाजे पर खड़े हैं, दो भू मध्य पीछे आओ, खेंचने को तैयार है समझे? यहां पर बैठकर सिमरन करो, यह फर्माया करते थे। यहां (दो भू मध्य) बैठा नहीं गया, मुश्किल बात यह है। यहाँ आओ वह हमारी इन्तजार में है कि किस वक्त मेरे बच्चे मेरे पास आते हैं। समझे! □